## विचार बिन्दु

**जो मनुष्य क्रोधी पर क्रोध नहीं करता और क्षमा कर देता है। वह अपनी और क्रोध करने वाले की महासंकट से रक्षा करता है। –वेदव्यास**

# गर्मी हाय गर्मी उर्फ़ मर्ज़ बढ़ता गया ज्यों-ज्यों दवा की!

हमारे देखते-देखते कितना कुछ बदल गया है! एक ज़माना वह था जब किसी के घर में टेबल फ़ैन होना भी उसके अमीर होने का परिचायक होता था। मुहल्ले में किसी-किसी घर में ही पंखा होता था। फिर वह समय आया जब अमीरों के यहां खस की टट्टियां लगने लगीं। उनकी तो बात ही अलग थी। हरेक की पहुंच में यह विलासिता थी ही नहीं। फिर दौर आया कूलर का। घर के बाहर किसी की खिड़की में कूलर नज़र आता तो देखने वालों की निगाह में गृह स्वामी का कद कुछ और बढ़ जाता। फिर आहिस्ता-आहिस्ता कूलर आम होने लगे और मुहल्ले के अमीर आदमी की पहचान इस बात से होने लगी कि उनके घर की खिड़की में एसी लगा हुआ है। बहुत लोग तो अपने घर की लोकेशन ही यह कहते हुए समझाते कि जिस घर की खिड़की में आपको एसी लगा नज़र आए, वही अपना घर है। वैसे भी वह जीपीएस और गूगल के पदार्पण से पहले का समय था। अब तो किसी को पता बताने की ज़रूरत ही नहीं रह गई है, और इस वजह से भी घर पर एसी लगा होने की ठसक कम हो गई है। असल में अब हालत यह है कि हर घर एसी वाला है।

वर्ल्ड एनर्जी आउटलुक के ताज़ा सर्वे के अनुसार विगत तेरह बरसों में एसी की हवा खाने वाले भारतीय परिवारों की संख्या में तीन गुना वृद्धि हो गई है, और अब हर सौ में से चौबीस, अर्थात लगभग एक चौथाई परिवारों के पास एसी है। बताया जा रहा है कि भारतीय बाज़ार एसी का दुनिया में सबसे ज़्यादा तेज़ी से बढ़ता बाज़ार है, और यह अनुमान लगाया जा रहा है कि सन् 2045 से 2050 तक आते-आते भारतीय बाज़ार उस चीन को पीछे छोड़ चुकेगा जिसे आज उसके नौ करोड़ एसी के कारण दुनिया का सबसे बड़ा एसी बाज़ार माना जाता है। वर्ल्ड एनर्जी आउटलुक ने बताया है कि अभी भारत में जो एसी बेचे जा रहे हैं उनमें से नब्बे प्रतिशत से ज़्यादा के ग्राहक वे हैं जो अपने जीवन का पहला एसी ख़रीद रहे हैं। यही नहीं, एसी की पहुंच अब महानगरों की सीमाओं को लांघ कर छोटे शहरों तक जा पहुंची है। देश की कुल एसी बिक्री का करीब पैंसठ प्रतिशत टियर 3, 4 व 5 के शहरों में हो रहा है।

एसी को लेकर भारतीयों की मानसिकता में भी बहुत बड़ा बदलाव आया है। शुरू-शुरू में लोग कहते थे कि हमें तो एसी सूट नहीं करता है। उनका तर्क यह होता था कि एसी की शीतलता से तेज़ गर्म माहौल में निकलने से स्वास्थ्य पर प्रतिकूल असर पड़ता है। एसी से गुरेज़ का एक बड़ा कारण, भले ही उसे कहा नहीं जाता था, उस पर होने वाले बिजली के भारी खर्च का आतंक भी था। सारी कारें भी कहां एसी युक्त होती थीं? सिनेमा घरों तक में कूलर का होना भी बड़ी बात थी। सिनेमा घरों के विज्ञापनों में सगर्व 'एयर कूल्ड' लिखा जाता था। यह कितना मज़ेदार था कि पर्दे पर बोले जा रहे संवादों और कूलर की घड़-घड़ आवाज़ के बीच सतत प्रतिस्पर्धा चलती रहती थी और इसके बावजूद हम कूलर की ठण्डी हवा का आनंद लेते थे। लेकिन अब सब कुछ बदल गया है। अब एसी का होना भी दिखावे और गर्व का विषय नहीं रह गया है। गर्मियों में तो हालत यह होने लगी है कि दुकानदार आपको एसी बेच कर आप पर उपकार करते हैं। अब गरज दुकानदार को नहीं खरीददार को है। चालीस-पचास हज़ार के इस उपकरण के लिए भी कई बार आपको प्रतीक्षा करनी पड़ती है। यह है एसी की डिमाण्ड का ताज़ा हाल। आम जन अक्सर कहते हैं कि इस साल जैसी गर्मी पहले कभी नहीं पड़ी। और यह बात तथ्यात्मक रूप से भी सही है। तापमान हर बरस थोड़ा-थोड़ा बढ़ता जा रहा है, और यह बात कहने की ज़रूरत नहीं है कि चालीस डिग्री सेल्सियस के बाद एक डिग्री तापमान का बढ़ना भी आपको बहुत अखरने लगता है। पता नहीं क्यों हम इस बात की अनदेखी करते हैं कि अपने लिए ठंडक का इंतज़ाम करके हम अपने चारों तरफ की गर्मी में वृद्धि करने का अपराध भी कर रहे हैं। अगर चाहें तोआप कुछ देर के लिए ही सही, एसी के कम्प्रेसर के पास खड़े रहकर मेरी बात की सत्यता का अनुभव कर सकते हैं। इस तरह एक भयंकर दुष्चक्र बनता जा रहा है।

**आगरा शहर की एक पॉश कॉलोनी (दयाल बाग़) है, जहां संपन्न, शिक्षित और सम्भ्रांत लोग रहते हैं। आपको जानकर आश्चर्य होगा कि इस कॉलोनी के एक भी घर में एसी नहीं है। यह भी याद रखें कि आगरा अपने क्रूर तापमान के लिए भी कुख्यात है। फिर भी इस कॉलोनी के लोग, जो एसी को आसानी से अफोर्ड भी कर सकते हैं, केवल पंखों और कूलरों के सहारे आराम की ज़िंदगी जी रहे हैं? ऐसा कैसे मुमकिन है, इस सवाल का जवाब इस बात में छिपा है कि उन्होंने अपने चारों तरफ हरियाली की चादर तान रखी है, जिससे वातावरण नियंत्रण में रहता है।**

हमें गर्मी महसूस होती है इसलिए हम एसी लगाते हैं, एसी गर्मी बढ़ाता है, इसलिए हम और एसी लगाते हैं, वे और गर्मी बढ़ाते हैं, इसलिए हम और एसी लगाते हैं। और इसी दुश्चक्र की परिणति यह भी है कि एसी का बाज़ार ख़ूब फल-फूल रहा है। यह तो एक बात हुई। अब दूसरी बात की तरफ़ भी ध्यान दें। ठंडक देने वाले अन्य उपकरणों जैसे– पंखों, कूलरों आदि की तुलना में एसी अधिक बिजली खाते हैं। तो एसी के बढ़ने का सीधा असर हमारे विद्युत उपभोग पर पड़ रहा है। एक आकलन के अनुसार भारत में ठंडक देने वाले उपकरणों पर देश के कुल विद्युत उपभोग का दस प्रतिशत खर्च हो रहा है। ग़ौर तलब यह बात है कि यह हिस्सेदारी सन् 2019 की तुलना में इक्कीस प्रतिशत बढ़ी है। और कहना अनावश्यक है कि जैसे-जैसे हम ज़्यादा एसी का उपयोग करने लगेंगे उनके कारण हमारा विद्युत उपभोग भी उसी अनुपात में बढ़ेगा। भले ही स्टार रेटिंग की वजह से इन उपकरणों पर अब पहले की तुलना में कम विद्युत खर्च होने लगी है, इस बचत को एसी की ज़्यादा खपत निरर्थक किए दे रही है। दूसरी बात, जिस पर आम जन तो बहुत दूर की बात है जो जानकार और समझदार हैं, वे भी ध्यान नहीं देते हैं, यह है कि एसी में प्रयुक्त होने वाला हाइड्रोफ्लोरोकार्बन (एचएफ़सी) ओज़ोन परत के लिए बहुत घातक है। भले ही भारत ने एचएफसी को क्रमशः कम करने के लिए मॉण्ट्रियल प्रोटोकॉल पर हस्ताक्षर कर रखे हैं, बात औपचारिकता से बहुत आगे नहीं बढ़ी है और हम अनजाने में ही सही एसी का अंधाधुंध उपभोग कर ओज़ोन परत को नुकसान पहुंचा रहे हैं। ओज़ोन परत के विदीर्ण होने से क्या नुकसान होते हैं, यह अलग से और विस्तार से चर्चा का विषय है। यहां इतना ही कह देना पर्याप्त होगा कि यह क्षति प्राण घातक है। लेकिन हम इसके प्रति सजग नहीं हैं।

इन सारी बातों के बीच हमारे ही देश के एक शहर की एक कॉलोनी की ख़बर आई है। ताजमहल के लिए विख्यात आगरा शहर में एक कॉलोनी है दयाल बाग़। यह आगरा शहर की एक पॉश कॉलोनी है, जहां संपन्न, शिक्षित और सम्भ्रांत लोग रहते हैं। आपको जानकर आश्चर्य होगा कि इस कॉलोनी के एक भी घर में एसी नहीं है। जी हां। आपने सही पढ़ा कि एक भी घर में एसी नहीं है। यह भी याद रखें कि आगरा अपने क्रूर तापमान के लिए भी कुख्यात है। फिर भी इस कॉलोनी के लोग, जो एसी को आसानी से अफोर्ड भी कर सकते हैं, केवल पंखों और कूलरों के सहारे आराम की ज़िंदगी जी रहे हैं? ऐसा कैसे मुमकिन है, इस सवाल का जवाब इस बात में छिपा है कि उन्होंने अपने चारों तरफ हरियाली की चादर तान रखी है, जिससे वातावरण नियंत्रण में रहता है। तो, एक वे हैं जो पेड़-पौधों के सहारे बग़ैर एसी के बहुत आराम से जी रहे हैं और एक हम हैं जो पेड़ों को काट कर कंक्रीट के जंगल खड़े कर रहे हैं और फिर तपन से निज़ात पाने के लिए एसी लगाते हैं और फिर उस एसी के कारण बढ़ी हुई गर्मी से राहत के लिए एक और एसी लगाते हैं!

इस हालत को देख वह पुरानी कहावत याद आए बग़ैर नहीं रहती है– मर्ज़ बढ़ता गया, ज्यों ज्यों दवा की।

हम ख़ुद अपनी मुसीबत बढ़ा रहे हैं!

**–अतिथि संपादक,**
**डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल**
**( शिक्षाविद और साहित्यकार )**

# विज़िटिंग कार्ड को "ना" कहें

दशरथ कुमार सोलंकी

यह विचार अचानक ही आया था। ऑफिस में कोई बैंककर्मी मिलने आए थे। स्वभावतः आते ही उन्होंने अपना विज़िटिंग कार्ड मेरे सामने किया। उस दिन सुबह ही मैंने कागज पर चिंतन करते हुए कुछ लिखा था। पेड़ से बनता है कागज। अर्थात् किसी भी रूप में कागज प्रकृति के विनाश का ही एक परिणाम है। विज़िटिंग कार्ड भी तो अधिकतर कागज से बना होते हैं!

पेड़ कटते हैं, कई जगह प्रयुक्त भी होते हैं। प्रगति के पथ के लिए कई बार पेड़ों को काटना आवश्यक हो सकता है। पर यदि उपयोग की सीमा हो और इस विनाश के परिणामस्वरूप कुछ सृजित होता हो तो न्यूनतम सीमा तक पेड़ काटे जाने को उचित ठहराया जा सकता है। फर्नीचर, औद्योगिक उपयोग या कि कागज, इन सबके लिए वनस्पति प्रयुक्त होती है। सब आधुनिकता के उत्पाद, प्रगति के पैमाने...और उत्सर्ग पेड़ का!

पेड़ कटा, कागज बना। उस पर किसी कवि ने कोई कविता लिखी पेड़ पर, प्रेम पर, संवेदना पर, मानवता पर। उसे पढ़कर भले मानुसों ने कुछ पेड़ लगाए। कविता सार्थक हुई, पेड़ का बलिदान व्यर्थ न गया। नरेश सक्सेना जी ने अपनी कविता में लिखा था –

**लिखता हूँ अंतिम इच्छाओं में**
**कि बिजली के दाहघर में हो मेरा अंतिम संस्कार**
**ताकि मेरे बाद**
**एक बेटे और एक बेटी के साथ**
**एक वृक्ष भी बचा रहे संसार में।**

पर कविताओं में जो लिखा होता, वह घटता नहीं। पेड़ बचाने और पेड़ पनपाने के प्रयास यदि होते हैं तो वे रंग क्यों नहीं लाते? पचास के पास पारा क्यों पहुँचता? मौसम असंतुलित क्यों होते? आपदाएँ इस तरह अचानक और भयानक रूप ले क्यों आतीं? धरती हरी भरी और नभ निरभ्र क्यों नहीं? पवन में कौनसा विष घुला है कि हर सांस में बीमारी काया में प्रवेश कर जाती? नदियाँ सूखी क्यों हैं या सैलाब की शक्ल क्यों ले रही? क्यों त्यागा उन्होंने कलकल गान, कूड़े कर्कट में फँसी है उनकी भी तो जान! तो बात इतनी सी है कि समस्याएँ हज़ार हैं, उनके समाधान का एक ही रास्ता, पेड़ लगाओ, पेड़ बचाओ। यह विचार अरसे से मन-मस्तिष्क में बह रहा था। मेरा ध्यान उन असंख्य विज़िटिंग कार्डों पर गया, जो लोगों ने मुझे दिए। मेरे किसी काम के नहीं थे वे। हाँ, कभी उन पर लिखे मोबाइल नंबर अवश्य काम आते, पर उसके लिए कार्ड को लेना देना कहाँ ज़रूरी है? नंबर मोबाइल में सहेजे जा सकते हैं। कार्ड की उपयोगिता इतनी भी नहीं। बस, स्टेटस सिम्बल की मानसिकता से बाहर आने की ज़रूरत है मात्र। तो इसी भाव प्रवाह में मैंने उन बैंककर्मी के नंबर नोट किए, उन्हें उनका विज़िटिंग कार्ड लौटा दिया। यह कहकर, कि यह कार्ड और कहीं काम आ जाएगा। यह भी, कि यदि संभव हो तो भविष्य में आप कार्ड मत छपवाना। कार्ड न छपवाकर आप पेड़ या उसकी एक डाली बचाएँगे। एक पेड़ बचेगा तो हमारी साँसें बचेंगी। गौरैया, गिलहरी बचेगी। छाँव बचेगी, ऋतुएँ बचेंगी, उनमें वसंत भी बचेगा। प्रेम और संवेदना बचेगी।

यद्यपि कुछ संस्थाओं और कंपनियों द्वारा रीसाइक्लिंग से विज़िटिंग कार्ड बनाये जाने को प्राथमिकता दी जाती हैं, इसलिए उस स्थिति में पर्यावरण को कोई नुक़सान नहीं पहुँचता। यह उचित भी है, परंतु सर्वाधिक उचित तो यह होगा कि हम विज़िटिंग कार्ड को प्रयुक्त ही न करें। रीसाइक्लिंग भी अंततः कोई मशीनी प्रक्रिया ही है। प्राचीन तिब्बती संस्कृति में ऐसी मान्यता थी कि यंत्रों के घर्र घर्र नाद से देवताओं को पीड़ा पहुँचती है। यह कोई आसमानी देवता नहीं, प्रकृति की उजास के झिलमिलाते देवता हैं ये, अनंत शांत निसर्ग से आशीष बन झरते देव हैं वे। हमारे प्राणों की हेतु प्रत्यक्ष प्रकृति, इसी में समाहित समस्त देवत्व। यंत्र मनुष्य की प्रगति और आधुनिकता के वाहक है, पर प्रकृति से सामंजस्य के साथ मशीन का अल्प व आवश्यक उपयोग ही मानवता को शांति और सुकून दे सकेगा। विज़िटिंग कार्ड एक शुरुआत भर है, अंततः मानवता को वहाँ पहुँचने का भाव धारण करना चाहिए जहां मनुष्य के किसी भी कार्य से परिवेश की असीम शांति भंग न हो। ऐसी ही चाह पर कविता बनी थी, उसका एक अंश इस तरह है –

**आवाज़ से ख़लल पड़ता है**
**निसर्ग की शांति में**
**इसलिए मौन साधना चाहता हूँ मैं**
**जब से महसूस किया मैंने**
**मेरी उपस्थिति से अवरुद्ध होती हवा की गति**
**अपनी अनुपस्थिति की प्रार्थना करने लगा हूँ प्रभु से**
**एक परछाई जितनी लम्बी**
**धूप को भी रोका मैंने जब-तब**
**किरणों ने तो कोई शिकायत नहीं की**
**पर मेरी लज्जा घनीभूत न हो**
**इतना कृतघ्न कैसे हो सकता था**
**?**
**जहां खड़ा हुआ मैं, बैठा**
**कुछ माटी दबी होगी**
**रजकणों ने जतलाया फिर भी नहीं कोई अहसान**
**मेरी प्यास के हवाले कितना पानी हुआ होगा**
**जीवनभर**
**किसके हिस्से की नमी सोखी होगी मैंने**
**रुक्षताओं का भागी बना इस तरह**
**एक टुकड़ा आसमान**
**जब से मेरे हिस्से आया**
**अनंत शून्य के विखंडन का उत्तरदायी बना मैं**
**क्षति, जल, पावक, गगन, समीर**
**सबके अस्तित्व पर मेरी छाया रही है**
**मेरी काया के आकार से, भार से**
**दिया कम, अनंत गुना करता रहा हासिल**
**ओ पंचभूतो !**
**आज से चेतना के सारे अर्थ तुम्हारे हवाले**
**आत्मा के सारे अंश समर्पित तुम्हें**
**मन के प्रपंच जो हैं बहुतेरे, वो मेरे**
**पर उसके उजास के निहितार्थ तुम्हें सौंपता हूँ**
**काया किंचित उद्देश्यों के लिए बचाए रखता हूँ अभी**
**असीम अवदानों से उऋण हो जाऊं जब**
**आना तुम सब**
**देह की नश्वरता पर अपने हस्ताक्षर मांड जाना....**
**उस दिन के लिए**
**मैं लिखकर बचाना चाहता हूँ**
**अनंत के सामीप्य का मधुरकाव्य**
**ताकि विछोह का शोकगीत न बांचे कोई.....**

एक पेड़ लगाना हम सबका दायित्व है। एक पेड़ को प्रत्यक्ष या प्रत्यक्ष रूप से बचाना इसी दायित्व का भाग है। हमें पता करना चाहिए, कैसे पेड़ बच सकते हैं। ऑफिस कागजरहित हो रहे, कविता सीधे ही स्क्रीन पर टाइप होकर सुरक्षित हो जाती। ठीक है कि कुछ नुकसान होंगे कंप्यूटर मोबाइल के, पर लाभ भी तो अनगिनत हैं। संख्यात्मक और बौद्धिक लाभ छोड़ भी दें तो मुझे इनका सबसे बड़ा लाभ यह दिखता है कि इन्होंने कागज पर हमारी निर्भरता कम की है। मैं पेड़ के प्रेम में हूँ, प्रकृति मेरे स्वभाव में समायी है, तो मेरा सारा गुणा-भाग या चिंतन पेड़ के परिप्रेक्ष्य में ही रहता। इसलिए पेड़ लगाने और पेड़ बचाने के हर विकल्प को अपनाने की ओर हमें अग्रसर होना ही पड़ेगा। विज़िटिंग कार्ड से मुक्ति पेड़ों को विनष्ट होने से बचाने का एक छोटा सा विकल्प है। वस्तुतः यह मानसिकता के रूपांतरण का ही एक प्रकल्प हो सकता है। यह एक प्रस्थान बिंदु की तरह है। मैंने उन बैंक वालों को समझाया, समझ गए वे। मैं हर उस आगंतुक को यह समझाता हूँ, जो विज़िटिंग कार्ड आगे करता है। वह समझ जाता है। एक संकल्प को उसकी दृष्टि में उतरते हुए देखता हूँ। संकल्प, कि वह अब नहीं छपवाएगा ऐसे कार्ड, जिससे प्रकृति की पुलक पर चोट पहुँचे। मोबाइल नंबर तो यूँ भी दिये जा सकते हैं। स्टेटस कार्ड से नहीं, व्यवहार और कर्म से निर्मित होगा, यह समझना मन में सुकून उत्पन्न करता है। एक पेड़ को बचाने के लिए आइए, विज़िटिंग कार्ड फ्री ऑफिस की कल्पना को अपने संकल्प से साकार करें। विज़िटिंग कार्ड को 'ना' कहें।

**–दशरथ कुमार सोलंकी,**
**निदेशक वित्त**
**जोधपुर विकास प्राधिकरण,**
**जोधपुर**

# 1980 से लेकर अभी तक क्रमोन्नत नहीं हुआ अड्डा गांव का प्राथमिक स्कूल

## एक दशक से स्कूल को सीनियर सैकेंडरी स्तर तक क्रमोन्नत करने की मांग कर रहे हैं ग्रामीण

- **करीब तीन हजार की आबादी वाले अड्डा गांव में केवल राजकीय प्राथमिक स्कूल होने से शिक्षा का स्तर गिरता जा रहा है**
- **पांचवी कक्षा के बाद गांव के बच्चों को आगे की पढ़ाई के लिए दो किलोमीटर दूर दूसरे गांव में जाना पड़ता है**
- **विशेषकर बालिकाएं पांचवी के बाद स्कूल नहीं होने से मजबूरी में अपनी पढाई बीच में ही छोड़ देती हैं**

**सूरौठ,** (निसं)। तहसील के समीपवर्ती नहरा क्षेत्र के सबसे बड़े गांव अड्डा में स्थित राजकीय प्राथमिक स्कूल 44 साल बाद भी क्रमोन्नत नहीं हो पाया है। पिछले एक दशक से ग्रामीण लगातार स्कूल को सीनियर सैकेंडरी स्तर तक क्रमोन्नत करने की मांग कर रहे हैं, लेकिन सरकार और प्रशासन के स्तर पर कोई सुनवाई नहीं हो पा रही है। करीब तीन हजार की आबादी वाले अड्डा गांव में केवल राजकीय प्राथमिक स्कूल होने से शिक्षा का स्तर गिरता जा रहा है, जिससे ग्रामीणों में रोष व्याप्त हैं।

स्थानीय ग्रामीण साहब सिंह गुर्जर अड्डा, पूर्व सरपंच मानसिंह, उपसरपंच राजहंस पहलवान नरोत्तम तंवर ने बताया कि पांचवी कक्षा के बाद गांव के बच्चों को आगे की पढ़ाई के लिए 2 किलोमीटर दूर दूसरे गांव में जाना पड़ता है इससे छोटे बच्चों को परेशानी होती है। विशेषकर बालिकाएं पांचवीं के बाद स्कूल नहीं होने से मजबूरी में अपनी पढ़ाई बीच में ही छोड़ देती हैं एक तरफ तो सरकार बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने की बात कर दूसरी ओर मजबूरन पढ़ाई छोड़ने को मजबूर हैं। ग्रामीणों ने बताया कि गांव अड्डा में राज्य सरकार ने 1980 में राजकीय प्राथमिक स्कूल स्थापित किया था। जिसे अभी तक क्रमोन्नत नहीं किया गया है, जबकि इसके बाद खुले कई स्कूलों को काफी पहले ही क्रमोन्नत किया जा चुका है।

ग्रामीणों ने बताया कि गांव की आबादी को देखते हुए अड्डा में राजकीय उच्च माध्यमिक स्कूल होना बहुत जरूरी है। गांव के राजकीय प्राथमिक स्कूल को क्रमोन्नत करने की ग्रामीण लंबे समय से मांग कर रहे हैं लेकिन अभी तक राज्य सरकार ने उनकी सुनवाई नहीं की है। इस दौरान ग्रामीण अतरूप सिंह, पूर्व सरपंच मानसिंह, पूर्व सरपंच कल्याण सिंह, दाताराम, शिवदयाल सैन, किरोड़ी सैन, भगवान सिंह पटेल, कन्हैया पटेल, राधे गोठिया, समय सिंह, रत्ती, खैमीसिंह, महाराज सिंह आदि मौजूद रहे।

ग्रामीणों ने बताया कि स्कूल को क्रमोन्नत करने के लिए उन्होंने मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा, शिक्षा मंत्री मदन दिलावर, गृह राज्य मंत्री जवाहर सिंह बेडम, स्थानीय विधायक बहदुर सिंह कोली से राजकीय प्राथमिक विद्यालय अड्डा को सीनियर सैकेंडरी स्कूल में क्रमोन्नत करने की गुहार लगाते हुए ग्रामीणों ने चेतावनी देते हुए सात दिवस में विद्यालय को क्रमोन्नत करने की मांग की है।

# पानी की किल्लत से परेशान महिलाओं ने मटकियां फोड़ प्रदर्शन किया

**मालपुरा,** (निसं) नगरपालिका शहरी क्षैत्र के अजमेर रोड आवासीय कॉलोनी में पानी की किल्लत से परेशान महिलाओं ने विभाग की लापरवाही को लेकर रविवार को मालपुरा-अजमेर सड़क मार्ग पर सीआईडी ऑफिस के सामने कंटीली झाड़ियां लगाकर जाम लगाकर प्रदर्शन किया। आवासीय कॉलोनी की महिलाओं ने बीच सड़क पर मटकियां फोड़ प्रदर्शन करते हुये मौके पर पहुंचे अधिकारियों के समक्ष अपनी पीड़ा बयां की। महिलाओं ने बताया कि पालिका शहरी क्षैत्र में लाखों रूपये की लागत से आवासीय मकान बनाकर विभाग के नियमानुसार नल कनेक्शन लेकर समय पर बिल का भुगतान करने के बावजूद भी भीषण गर्मी मे पानी की समस्या से जूझना पड़ रहा है। महिलाओं ने बताया कि दूर-दराज से पानी लाकर अथवा मुंह मांगे दामों में पानी के टैंकर डलवाकर रोजमर्रा के कार्य करने पर विवश होना पड़ रहा है। यहां तक कि कई आवासीय कॉलोनियों में तो विभाग द्वारा लाईनें तो डाली गई लेकिन उनमें सुचारू पेयजल आपूर्ति की व्यवस्थाएं नहीं की गई। लम्बे समय से पानी की समस्या को लेकर जलदाय विभाग के अधिकारियों व स्थानीय जनप्रतिनिधियों को अवगत करवाने के बावजूद समस्या का समाधान नहीं हो सका है। महिलाओं ने बताया कि पानी जैसी मूलभूत सुविधा के लिये उन्हें भटकना पड़ रहा है। शहरी क्षैत्र में नौ करोड़ रूपयों की लागत से नवीन टंकियों का निर्माण व पेयजल की नई लाईनें डालने के बावजूद आवासीय कॉलोनियों में सुचारू पेयजल आपूर्ति नहीं होना कई तरह के सवालों को जन्म दे रहा है। करोड़ों रूपये खर्च होने व शहर में 6 टंकियां बनने के बावजूद पेयजल समस्या का समाधान नहीं होना किसी बड़े आश्चर्य से कम नहीं है। वहीं मुख्य सड़क पर जाम लगने से सड़क के दोनों और वाहनों की लम्बी कतारें लग गई। पुलिस अधिकारियों की समझाईश पर भी महिलाओं ने जाम नहीं हटाया।

मालपुरा के अजमेर रोड पर पानी की किल्लत से परेशान महिलाओं ने जाम लगाया।

- **आवासीय कॉलोनी की महिलाओं ने मौके पर पहुंचे अधिकारियों के समक्ष अपनी पीड़ा बयां की**
- **मौके पर पहुंची जलदाय विभाग की कनिष्ठ अभियंता ने महिलाओं को समस्या के समाधान का आश्वासन दिया**

मौके पर पहुंची जलदाय विभाग की कनिष्ठ अभियंता हंसा चौधरी ने मौके पर मौजूद महिलाओं की समस्या को गंभीरता से सुनते हुये जल्द कॉलोनी मे सुचारू पेयजल आपूर्ति शुरू करवाने तथा दोषी कार्मिको के विरूद्ध कार्यवाही के आश्वासन के बाद महिलाओं ने जाम हटाया।

## राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

**सोमवार 24 जून, 2024**

आषाढ़ मास, कृष्ण पक्ष, तृतीया तिथि, सोमवार, विक्रम संवत 2081, उत्तराषाढ़ा नक्षत्र दिन 3:54 तक, ऐन्द्रयन योग दिन 11:15 तक, वणिज करण दिन 2:15 तक, चन्द्रमा आज मकर राशि में संचार करेगा।

**ग्रह स्थितिः** सूर्य-मिथुन, चन्द्रमा-मकर, मंगल-मेष, बुध-मिथुन, गुरू-वृष, शुक्र-मिथुन, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज सर्वार्थ सिद्धि योग दिन 3:54 से सूर्योदय तक है।

**श्रेष्ठ चौघड़ियाः** अमृत सूर्योदय से 7:21 तक, शुभ 9:03 से 10:46 तक, चर 2:11 से 3:54 तक, लाभ-अमृत 3:54 से सूर्यास्त तक।

**राहूकालः** 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 5:37, सूर्यास्त 7:20

**मेष**
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।

**वृष**
व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

**मिथुन**
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। आज बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। यात्रा टालना ठीक रहेगा।

**कर्क**
परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

**सिंह**
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त होंगे। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।

**कन्या**
आर्थिक/वित्तिय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी।

**तुला**
घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

**वृश्चिक**
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक आर्थिक मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।

**धनु**
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

**मकर**
व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। विवादित मामलों से राहत मिलेगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

**कुंभ**
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि होगी। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। आज खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

**मीन**
आर्थिक/वित्तिय मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी।